भारतीय वेब सीरीज के संदर्भ में 'पैरा-सोशल इंटरैक्श
और 'यूजेस एंड ग्रेटिफिकेशन' को समझाइए।
भारतीय वेब सीरीज के संदर्भ में 'पैरा-सोशल इंटरैक्श
और 'यूजेस एंड ग्रेटिफिकेशन' को समझना बहुत
आसान है। आइए, इसे दो बेहद लोकप्रिय सीरीज के
उदाहरण से देखते हैं:
1. 'पंचायत' (Panchayat): अपनेपन का अहसास
यह सीरीज पैरा-सोशल इंटरैक्शन का सबसे सटीक
उदाहरण है।
* किरदारों से जुड़ाव: दर्शक 'अभिषेक त्रिपाठी' (सचि
जी) के शहरी संघर्ष या 'प्रह्लाद चाका' की सादगी से र
को इतना जोड़ लेते हैं कि फुलेरा गाँव उन्हें अपना लग
लगता है।
* ग्रेटिफिकेशन (संतुष्टि): यहाँ दर्शक को 'नॉस्टैल्जिय
(Nostalgia) और 'रूरल एस्केपिज्म' की संतुष्टि
मिलती है। शहर की भागदौड़ से दूर, लोग उस शांत ग
की जिंदगी का हिस्सा बनना चाहते हैं।
* इम्पैक्ट: जब तीसरे सीजन में कुछ दुखद घटता है,
तो सोशल मीडिया पर लोगों ने ऐसे दुख व्यक्त किया
जैसे उनके किसी सगे संबंधी के साथ कुछ हुआ हो। य
एक गहरा पैरा-सोशल रिश्ता है।

2. 'मिर्जापुर' (Mirzapur): सत्ता और एड्रेनालिन का एस्केपिज्म
यह सीरीज बिल्कुल अलग तरह की जरूरतों को पूरा करती है।
* पावर फैंटेसी (Power Fantasy): एक आम इंसान जो असल जिंदगी में शायद दब कर रहता है, वह 'गुड्डू भैया' या 'कालीन भैया' के पावरफुल किरदारों के जरिए ताकत का अनुभव करता है।
* ग्रेटिफिकेशन: यहाँ 'तनाव मुक्ति' (Tension Release) और 'उत्तेजना' (Excitement) मुख्य उद्देश्य हैं। हिंसा और सस्पेंस दर्शक को उसकी अपनी बोरियत भरी जिंदगी से निकालकर एक खतरनाक और रोमांचक दुनिया में ले जाते हैं।
* रिश्ता: दर्शक जानते हैं कि ये किरदार अपराधी हैं, फिर भी उनके प्रति एक 'सहानुभूति' या 'प्रशंसा' का भाव पैदा हो जाता है क्योंकि वे उनके साथ घंटों बिता चुके हैं।

इन प्लेटफॉर्म्स की सफलता का 'सीक्रेट फॉर्मूला'

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स इस थ्योरी का उपयोग करके अपने कंटेंट को 'हुक' (Hook) बनाते हैं:

जरूरत (Need)	ओटीटी का समाधान (Solution)	परिणाम (Result)
अकेलापन	लंबे चलने वाले किरदार	पैरा-सोशल इंटरैक्शन (दोस्ती का अहसास)
मानसिक थकान	बिंज-वॉचिंग विकल्प	एस्केपिज्म (दुनिया से कटना)
सामाजिक प्रतिष्ठा	'ट्रेंडिंग' कंटेंट	सामाजिक एकीकरण (बातों का हिस्सा बनना)

निष्कर्ष

अंततः, 'यूजेस एंड ग्रेटिफिकेशन' थ्योरी हमें बताती है कि हम 'पंचायत' देखते हैं ताकि हम जड़ों से जुड़ा महसूस करें, और 'मिर्जापुर' देखते हैं ताकि हम रोमांच महसूस कर सकें। ओटीटी सिर्फ वीडियो चलाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी मनोवैज्ञानिक कमियों को भरने वाला एक डिजिटल साथी बन गया है।